

अखण्ड रश्मियाँ



वर्ष - 11,
अंक - 07,
दिसम्बर-2016

सर्वधर्म समन्वययुक्त, आध्यात्मिक,
वैज्ञानिक मासिक पत्रिका

प्रति अंक-15/-
वार्षिक सहयोग-150/-
प्रकाशन तिथि : 01 दिसम्बर 2016

संयुक्त विश्वधर्म संघ ट्रस्ट

ऋतम्भरा आश्रम कटरा (चैरिटी)

पोस्ट-रजनियाँ, तह.-देवसर, जिला-सिंगरौली (म.प्र.) भारत
मोबा.-9755875934, 9893153074

सत्प्रेरक-संरक्षक :

Website : www.samanvaymission.org

E-mail : info@samanvaymission.org

facebook.com/samanvay.mission

twitter.com/SamanvayMission

ऋषि युग्म की सूक्ष्म सत्ता, पैगम्बरों की कारण सत्ता एवं रजदास जी

संपादक, प्रकाशक, मुद्रक: शिवकुमार शर्मा, ऋतम्भरा आश्रम कटरा, पो.-रजनियाँ, जिला-सिंगरौली (म.प्र.)

संपादक मण्डल : श्रीमती कुसुमलता, श्री हरिशंकर महाराज जी, प्रेमलाल प्रेमानन्द जी, राहुल आचार्य जी, मुखलाराम तथागत जी,
रामसुमिरन अरिहन्त जी, विद्या रवि जी, पी.एल. शर्मा प्राचार्य जी, लालबहादुर गुरुजी, यमुनाप्रसाद बैरागी जी।

अनुक्रमणिका

- ◆ अमृतवाणी - 01
- ◆ युवाओं का दोहन हो रहा है - 02
- ◆ मृत्यु कब तक नहीं होती? - 06
- ◆ मित्र आचार संहिता - 09
- ◆ आत्मा से आचरण प्रवाहित होता है - 10
- ◆ मजहबी मन अवैज्ञानिक अधिक है - 13
- ◆ महात्मा लोग विज्ञान विरोधी हैं - 16
- ◆ चलो आगे-सोचो पीछे - 18
- ◆ कुछ आप कहें कुछ हम कहें - 19
- ◆ करें स्वयोग पूर्ण करें मनोकामना - 20
- ◆ मित्रमण्डल - 21
- ◆ आपकी समस्या समाधान हमारे - 22
- ◆ अपनों से एक अपील - 23

अमृतवाणी

“दुनिया को बदलने के लिए हमें शुरुआत खुद से करनी होगी और खुद से शुरू करने के लिए सर्वाधिक महत्व की बात है हमारी मंशा। हमारी मंशा स्वयं को समझने की होनी चाहिए, न कि बात दूसरों के ऊपर छोड़ने की, कि वे अपने को बदलें अथवा क्रान्ति द्वारा दक्षिणपंथी या वामपंथी परिवर्तन लाएं। यह आपका और मेरा, हम सबका दायित्व है। आमूल क्रान्ति, रूपांतरण या नवजीवन का संचार करने वाल सही मूल्यों को खोज निकालने के लिए यह अनिवार्य है कि व्यक्ति स्वयं को समझे। स्वबोध प्रज्ञा का और इस प्रकार आमूल परिवर्तन या नवजीवन का आरंभ है।”

- जे. कृष्णमूर्ति

युवाओं का दोहन हो रहा है...

कोई भी देश हो या समाज हो युवा ही इंजन होते हैं जिसे खींचकर सही दिशा में ले जाते हैं। जन्मे शिशु से लेकर युवा होने तक उसे संस्कारित कर योग्य बनाना विशेष महत्वपूर्ण काम होता है। जिसे माता-पिता से लेकर शिक्षण संस्थानों, अध्यात्म आचार्यों, शासनाध्यक्षों को मिलकर सुयोग्य युवा पीढ़ी बनाना चाहिए।

जिस देश का कानून, सांस्कृतिक परम्पराएँ, सामाजिक व्यवस्थाएँ एवं आर्थिक संरचनाएँ युवाओं के हित में होती हैं उस देश समाज के युवा स्वर्ण कुन्दन की तरह से खरादे हुए होते हैं। हर युवा ही भावी देश समाज का नागरिक होता है, जिसके कंधे पर समाज का बोझ होता है। देश की नाव की पतवार देश के युवा के हाँथों में होती है। यदि वह कुशल योग्य नैतिक उत्तरदायित्व पूर्ण युवा है तो देश की नाव अथाह-अगम झँझावतों से टकराते हुए खींचकर किनारे लगा ही देगा और देश समाज की लाज बचा लेगा।

घर गृहस्थी से लेकर देश की अन्तिम कुर्सी तक में युवा का ही रोल होता है। सीमा की चौकसी, आसमान में उड़ना, इन्जीनियरिंग में खतरा उठाना, वैज्ञानिकीय शोध में जोखिम में हाथ डालना सिपाही बनकर माँ-बहनों की लाज बचाना, अत्याचारियों से जूझना, यह सब युवाओं के बल पर ही निर्भर करता है। अब रही बात ये कि हम बुजुर्ग लोग देश की युवा पीढ़ी को सुसंस्कारित सुयोग्य बनाया कि नहीं, हमारा चरित्र उनके लिए अनुकरणीय रहा की नहीं, जिस पर युवा दो कदम चल सकें यह सब जिम्मेदारी हम सब बुजुर्गों की है जो युवा वर्ग के पूर्वज कहलाते हैं।

शिक्षा और संस्कार का स्तर इतना गिर चुका है कि दो शब्द लिखने में खुद को शर्म लगती है। इसी संस्कारविहीन नैतिकविहीन शिक्षण संस्थानों से, पाखण्डी, आडम्बरी, कर्मकाण्डी अध्यात्मिक आचार्यों द्वारा वोट की राजनीतिक शासनाध्यक्षों द्वारा अपने-अपने स्वार्थपरक दिशा निर्देश देकर उन्हें गढ़ा जा रहा है। वर्तमान की युवा से एक रिमोड की तरह से काम लिया जा रहा है।

देश की युवा पीढ़ी खुद पर सोचने-विचारने में



सक्षम नहीं देखी जा रही है बल्कि दिशा विहीन भटकती नजर आ रही है। चाहे राजनीतिक कोई दल हो, धार्मिक संगठन हो, साम्प्रदायिक समूह हो, सामाजिक संगठन हो या कि कोई सांस्कृतिक संगठन हो या कि कोई जाति वर्ग विशेष का संगठन हो सभी युवाओं को एक औजार की तरह से इस्तेमाल कर रहे हैं।

युवा एक ऐसा गर्म व्यक्तित्व होता है उसे जिधर मोड़ दिया जाय वह उधर ही मुड़ जाता है फिर चाहे युवा वर्ग का सदुपयोग कर लिया जाय या कि दुरुपयोग ही कर लिया जाय। यह उन स्वार्थान्धों के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।

ऐसा इसलिए सम्भव है कि हमारे देश का युवा अधिकतम संस्कार विहीन शिक्षित होकर भी अशिक्षित के बराबर है। नैतिकता का ज्ञान उन्हें नहीं है उन्हें सहज तरीके से ठगा जा सकता है। थोड़ा सी लालच-प्रलोभन उनके लिए पर्याप्त है, इस बारीकी को संगठन के संस्थापक अच्छी तरह से जानते हैं तभी तो हर लूले-बूचे संगठनों में युवाओं की वांछित भीड़ नजर आती है।

हमारे देश के युवा को यही नहीं पता कि हमें जो प्रेरित किया जा रहा है, हमारी भावना को उभारकर उछला जा रहा है वह गाय के थन के इन्जेक्शन की तरह से तो नहीं है कि दूध निचोड़ कर शोक्ता थन को छोड़ दिया जाता है।

जिस देश में 65% युवा हो उस देश को दूसरे देशों की मदद के लिए निर्भर रहना पड़े यह कितनी अशोभनीय बात है। इसका कारण यही है कि योग्य युवा न गढ़ने की वेमानी भरी शिक्षानीति, पाखण्डी धर्मध्वजों को बढ़ावा, भाग्यवाद का पाठ, असमानता भरी सामाजिक व्यवस्था, वोट बैंक की राजनीति,

बुद्ध बनाकर उन पर शासन करने की गुप्त मानसिकता, जाति-पाँति वर्ग सम्प्रदाय की विद्वेष भरी भावना ने ही हमारे देश के युवा को कूपमण्डूप बनाकर डिग्रीधारी पट्टेदार बनाकर छोड़ दिया है।

डिग्री बाँटने वाली युनिवर्सिटियों से खरीदने से मिलती डिग्रियाँ, कथा कहानियों चुटकुलों के बोल से बने सन्त जाति पाँति पर होती अयोग्य राजनीति ने युवा संसार ही नष्ट कर रख दिया है।

देश की सम्पति सोना, चाँदी, हीरा, जमीन नहीं होते, देश की सच्ची सम्पति देश का सच्चा निष्ठावान ईमानदार कर्तव्य परायण, युवा होता है जिस पर हमारे देश के बुजुर्गों ने ध्यान ही नहीं दिया। उल्टा उनका विरोधियों के परास्त करने में, अपने समर्थन में, अपनी सुरक्षा में, अपनी दुकान चलाने में उनका दुरुपयोग हो रहा है।

युवाओं को ऐसा बनाया ही नहीं गया है कि वह सत् और असत् का निर्णय कर सके, उसे तो केवल रिमोड बनाया गया है। सभी क्षेत्रों संगठनों के बुजुर्गों ने ऐसा ही किया है।

जैसा कि राजनीतिक दलों ने युवाओं का संगठन बनाकर युवा मोर्चा फलाना बनाकर एक-दूसरे दल के विपरीत उन्हें विरोधी, मनगढ़ंत, कूटरचित, भाषण, प्रवचन सिखाकर, उलाहना देकर उन्हें उत्तेजित करके मरने-मारने के लिए रिमोड की तरह से उपयोग कर रहे हैं। दिशा-विहीन युवा सभी दलों में एक-दूसरे की तेरहवीं-वरषी करने में लगे दिखायी देते हैं।

ऐसी खरी खोटी कमियाँ निकालते रहते हैं लगता है कि युवा तो नया है, किन्तु इसका मस्तिष्क अति प्राचीन रूप से सजा है तभी तो जन्म आज लिया और गाली अतीत वालों को देता है-ऐसा इन युवाओं

को किसने बनाया ? वही संगठनाध्यक्षों ने जिन्हें अपने मतलब से मतलब है, न कि देश और युवा से कोई मतलब है।

इन्हीं युवाओं के छिन्न-भिन्न सोच से देश में न तो एकता बन पा रही है और न ही मन वांछित विकास हो रहा है। सभी राजनीतिक दल हर युवा को अनाप-सनाप पदाधिकारी बनाकर मुफ्त का माल खाने की, परलोक में परियो संग रास रचाने का लालच देकर उनकी जिन्दगी बरवाद कर रहे हैं, साथ ही पूरा देश गर्त में गिरता चला जा रहा है।

हर दल अपना-अपना एक नायक बनाकर रोटी पका रहे हैं और एक-दूसरे की छीछा-लेदर कर सत्ता हथियाने में देश के युवाओं का इस्तेमाल कर रहे हैं। चाहे गाँधी हो, चाहे अम्बेडकर हो, चाहे हेडगेवर हो, चाहे राममनोहर लोदिया हो, चाहे शिवाजी हो, चाहे मार्क लेनिन हों, चाहे सुभाष आजाद हों, बिसमिल्ला खाँ, अब्दुल कलाम जी हों, सब देश के लिए वरेण्य एवं पूज्यनीय है, हम सब देशवासियों के लिए आदर्श पुरुष स्वरूप हैं। किन्तु इनके नाम की जो दाल रोटी खा रहे हैं और दूसरे किसी आदर्श पुरुष की निन्दा आलोचना कर युवाओं को लड़ने-मरने के लिए उकसाते रहते हैं, यह महा अन्याय है। जब तक इस सच्चाई को युवा नहीं समझ लेगा तब तक वह एक रिमोड ही बना रहेगा।

इसी प्रकार धर्माध्यक्षों ने धर्म के दो भाग कर धर्म की व्याख्या करते आ रहे हैं। सबसे पहले तो विरोधी पक्ष की रचना किये, उसका नाम, अधर्म, शैतान, राक्षस, परलोक, असुर आदि के साथ नीच गवाँर, अछूत-सछूत जैसी मनगढ़ंत रचना कर इन्हे दैवी अमली जामा पहनाया और उसके विरोध के सपोट में धर्म, देवता, स्वर्ग-नरक, सन्त, ब्राह्मण,

साधु की रचना कर इन्हे दैवीय इच्छा बताया।

इन्हीं दो पाटों के बीच धर्म-अधर्म, ईश्वर-राक्षस, लोक-परलोक, स्वर्ग-नरक, नीच-ऊँच, सछूत-अछूत, जड़-चेतन का अन्तर बता-बताकर कल्पना का जाल रातो दिन बुनकर देश की युवाओं की नयी खोपड़ी में हजारों-हजार साल पुरानी सड़ी-गली बीती-बातों को भर कर पीछे धसीटा जा रहा है।

देश का युवा जन्मता तो आज है, किन्तु उसका मस्तिष्क अतीतवादी होता है यह इस देश का कितनी बड़ी दुर्भाग्य पूर्ण घटना है जिसे ये धर्माध्यक्ष युवाओं के मस्तिष्क में कूट-कूटकर भरते चले जा रहे हैं। हमारे देश के युवा को वर्तमान के लिए सोचने का वक्त ही नहीं दिया जा रहा है। हर युवा को अपने जाल में मछली की तरह फँसाने के अनेकानेक संगठनीय जाल फैले पड़े हैं। कहीं न कहीं इन संगठनीय जालों में हमारे देश के युवा फँस ही जाते हैं, जिनका दोहन होता है।

साम्प्रदायिक जाल तो इतने मजबूत हैं कि यदि कोई एक बार फँसा तो उस जाल से बाहर आ ही नहीं सकता। गर्व से कहो हम हिन्दू हैं। सनातन वैदिक का नाम ही नहीं लिया जाता क्योंकि उस विचारधारा में मानवतावादी सिद्धान्त हैं। मुसलमान के विरोध में हिन्दू संगठन जन्म लिया है। जबकि हिन्दू कोई धर्म नहीं है इस धरा का वैदिक धर्म या कि सनातन धर्म है। एक मुसलमान युवा उधर से ललकारता है, ये हिन्दू काफिर हैं, दूर से हिन्दू बना युवा ललकारता है, ये म्लेच्छ मुसलमान है, बौद्धी बना युवा ललकारता है ये हिन्दू हमारे विरोधी हैं, इधर सिक्ख युवा ललकारता है कि हिन्दू मुझे नहीं पसन्द हैं क्योंकि पगड़ी नहीं बाँधता, उधर ईसाई बना युवा ललकारता है कि ये सब नास्तिक हिन्दू हैं इनके भगवानों में कोई दम खम नहीं है, ये नीच

अछूत आदिवासी, पामर हैं, हम तो ब्राह्मण, क्षत्रिय हैं।

युवा तो युवा ही है चाहे वह जिस धरा के कोने में पैदा हुआ हो, या कि जिस किसी विचार धारा के माता-पिता की गोद में पैदा हुआ हो उसे यदि संस्कार देकर सम्हाल लिया जाता तो इस देश का ही नहीं सारी धरा का भाग्य बदल जाता। किन्तु इमामों ने, पण्डो ने, ब्राह्मणों ने, भिक्षुओं ने, निहंगो ने, पोपो ने, साधुओं ने उनका उपयोग खूनी रिमोड की तरह से कर रहे हैं। आज दुनिया आतंकवाद से झुलस रही है उसके पीछे इन्हीं इमामो बुजुर्गों की दूषित मानसिकता है इसी तरह से कम या ज्यादा हर देश के भीतर मचा है। इसको कैसे ठीक किया जाय, इसका एक ही उपाय है कि-

हर युवा अपने आप की ओर देखे वह किसी के बहकावे, उकसावे में न आये। अपने अन्तःकरण में उतर कर अपनी समीक्षा करें कि हमारे लायक नैतिक और अनैतिकता में क्या अन्तर है। हम जो करने जा रहे हैं वह कितना सत् और असत् है यह कार्य हम स्वप्रेरणा से कर रहे हैं याँ कि किसी के उलाहने देने या कि बहकावे में आकर कर रहे हैं।

हर युवा अपने जीवन व सफलता-असफलता की जिम्मेदारी स्वयं अपने ऊपर ले। मुफ्त का माल खाने की आदत व स्वर्ग में परी के साथ रास रचाने का सपना न देखे। जो भी हाँथ में काम ले उसे परख-निरख कर करें। परिणाम नियति पर छोड़ें। किसी दल वाले, किसी धर्म वाले, किसी सम्प्रदाय वाले, किसी जाति वर्ग वाले को अपना विरोधी किसी के बहकावे में आकर न माने, सारा जगत अपना हम सबके ऐसा प्रेममय मित्रता भरा व्यवहार रखें।

नित-नयी शोध कर वर्तमान में जियें अतीत के आदर्शों के बजाय अपनी आत्मा को, अपने स्वप्रेरणा को अपना आदर्श मानकर जो आपकी अन्तरात्मा कहे वही कार्य हाँथ में ले।

आदर्शों ने, गुरुओं ने, इमामों ने, पोप पादरियों ने इस धरा पर विरोधी तलवार खिंचवाकर खूब खून खराबा करवाया अब इनसे हर युवा बचें इनके झाँसे में न आयें। आज तक कितने युवा आतंकवादी बनकर मर गये, पर आई.यस.आई. का सरगना अलकायदा का सरगना इस धरा पर छिपकर परियों हूँरो के मध्य जन्नत का आनन्द ले रहा है और युवाओं को उकसा कर मरने मारने के लिए खूनी रिमोड बनाकर धर्म, मजहब, अल्ला ईश्वर के नाम पर उपयोग कर रहा है। इनसे बचें। यही हाल हिन्दू संगठन, मुस्लिम संगठन, बौद्धी-संगठन, जैनी संगठन, ईसाई संगठन सब कर रहे हैं।

ये विश्व बन्धुत्व को एक नजरिये से नहीं देख पा रहे हैं इनका दृष्टिकोण बहुत ही बौना है। इनसे जो युवा अपने को बचा लिया उसका इस धरा पर जन्म लेना सार्थक हो जायेगा।

दो शब्दों में हम यही कहना चाहूँगा कि आप स्वयोग करें, अपने आप के पास रहे, अपने अन्तरतम में उतरें, अपनी अन्तरात्मा में रमण करें-आपको स्वयं सत्य-असत्य का बोध होता चलेगा। किसी के मार्गदर्शन की जरूरत आपको नहीं पड़ेगी।

आसमान से बहुत रसूल उतर चुके जिनका देखा आपने खूनी उसूल अब आप अपने भीतर उतरें, आसमान से उतरने वाले फरिश्ते, रसूल अवतारी का इन्तजार छोड़ें। इसी में आप विश्व युवा बन्धुओं की भलाई है।

मृत्यु कब तक नहीं होती ???

यह अतिशय शोध का विषय है। आज भी मृत्यु क्रिया अनसुलझी जैसी ही है। विश्व के सभी दर्शनों, वैज्ञानिकीय शोधों, धर्मग्रन्थों में मृत्यु का उत्तर कुल 17 प्रकार से मिलता है। प्रश्न एक है किन्तु उत्तर 17 हैं, अर्थात् अनेक हैं।

इस रहस्य को जाने बिना मृत्यु संबंधी शोध अपूर्ण रह जाती है। इस जगत में केवल एक तत्व ही है जिसे हम सत्य तत्व या कि परम ऊर्जा कह सकते हैं। उससे ही दो स्वरूपों का सृजन हो रहा है। ऊर्जा के जमाव (संघनन) और बिना जमाव वाली ऊर्जा



इसी प्राकृतिक क्रिया पर यह शोध है जो स्वयं के अन्तर्गत में उतर कर समझा गया है न कि कोई कल्पना के साये में सजाया गया शोध है।
जीव कैसे बना ?

(असंघनन)। संघनित ऊर्जा (जमाव वाली ऊर्जा) द्रव्य स्वरूप बन रही है जिसे हम प्रकृति कहते हैं और असंघनित ऊर्जा (बिना जमी ऊर्जा) जिसे हम आत्मा, रूह, नूर, स्योल या कुछ कहते हैं।

अनन्त के अन्त से अनन्त की ओर कालविहीन समय में निरन्तर ऊर्जा प्रवाहित होकर दूरान्त में जाकर जमाव ले रही है अर्थात् संघनित हो रही है। प्रारम्भ में संघनन अति न्यून मात्रा से चलकर क्रमशः ध्वनि, अग्नि, वायु, तरल, ठोस के रूप में होता हुआ भीमकाय ग्रह तारों तक के रूप में बदल रहा है। इन्हीं असंघनित और संघनित के बीच दबाव के कारण विस्फोट होता रहता है, विस्फोट का संस्कार प्रकृति में खण्डन और विखण्डन के रूप में जारी रहता है। विस्फोट के दौरान संयोगवस असंघनित ऊर्जा न्यूनांश के ऊपर संघनित ऊर्जा जो तरल प्रोटीन समान हो चुकी रहती है न्यूनांश पर लेप चढ़ जाता है जिससे असंघनित ऊर्जा, संघनित ऊर्जा मय तरल तत्व के भीतर बन्द हो जाती है। तब पर भी उसका विखण्डन बन्द नहीं होता अर्थात् एक से अनेक भागों में खण्डित होती रहती है। जो तरल द्रव्यमान अर्थात् संघनित द्रव्यमान अन्य जगह चिपक कर या लिपट कर अपना पोषण करता रहता है अर्थात् अवशोषण करता रहता है। जिससे उसकी कायाभित्ति मजबूत होती रहती है।

किन्तु इस कायाभित्ति के भीतर से असंघनित ऊर्जा जिसे आज हम साहित्यिक पौराणिक भाषा में आत्मा कहते हैं वह बाहर निकलना चाहती है और उसके प्रयास को संघनित ऊर्जा जिसे वैज्ञानिक प्रोटीन कहते हैं या काया भित्ति कहते हैं वह उसे बाहर निकलने देने से रोकती है।

असंघनित ऊर्जा बाहर अर्थात् मुक्त होना चाहती है और संघनित ऊर्जा अन्दर अर्थात् बाँधकर रखना चाहती है। इन्हीं प्राकृतिक संयोग के कारण एक को मुक्त होने और दूसरे को बाँधे रखने के नीच क्रिया के विपरीत प्रतिक्रिया का जन्म होता है। इसी क्रिया और प्रतिक्रिया के बीच एक तीसरी चीज का जन्म होने

लगता है जिसे मन्शा या इच्छा या कि वृत्ति कहते हैं। इन्हीं संघनित और असंघनित तत्वों के कारण क्रिया और प्रतिक्रिया के बीच निरन्तरता के कारण मंशा भी घनी होती चली जाती है जिसे आज हम 'मन' या विचार जैसे कुछ नामों से पुकारते हैं। यह तीसरी चीज मन विकसित और शक्तिशाली होता चला जाता है। जो आगे चलकर असंघनित ऊर्जा आत्मा और संघनित ऊर्जा कायाभित्ति के बीच मध्यस्तता करता है। जान और बेजान में ही नहीं, जीवमात्र-कणमात्र में भी यह क्रिया जारी है। यह मन तत्व बार-बार वातावरण स्थान के पोषण युक्त कायाभित्ति के गुण को ग्रहण कर गुण स्वादी हो जाता है अर्थात् गुण प्रधान हो जाता है। जो अपने गुण प्रभाव के बल से कायाभित्ति में इन्द्रियों का उभार प्रकट करता है वही काया भित्ति के उभार विकसित होकर इन्द्रिय रूप में आते हैं। यही तीसरा मनतत्व ही क्रमशः एक-एक इन्द्रियों का विकास करता हुआ अन्यान्य शकल वाली योनियों को धारण करता हुआ सफल मानव योनि तक आता है।

विस्फोट, खण्डन और विखण्डन में कायाभित्ति नहीं छोड़ पाता अर्थात् क्रिया और प्रतिक्रिया में जो एक-दूसरे से मुक्त होने की क्रिया हो रही थी, वह जारी रहती है। कायाभित्ति को ही खण्डित होकर दूसरे रूप में बनना पड़ता था।

जब वही न्यूनांश असंघनित संघनित का युग्म वायरस बैक्टीरिया के जीवाणु के रूप में होते हुए उद्भिज, स्वेदज, अमैथुन के अवस्था तक विकसित हो जाता है तब तक में कायाभित्ति अर्थात् संघनित तत्व से छुटकारा पाने का गुण विकसित कर लेता है यही से मृत्यु होना शुरू होता है इसके पूर्व मृत्यु नहीं होती थी। यही उद्भिज कुछ अंशों में स्वेदज थोड़ा अधिक अंशों में अमैथुन, अधिक अंशों में काया पिंजर से छोड़कर बाहर कुछ तत्व निकलता सा महसूस होता

है। काया पिंजर पड़ा रहता है, उसके भीतर से कुछ तत्व निकल जाता है जिससे उस काया पिंजर में हलचल बन्द हो जाती है। जिसे हम मानवीय भाषा में मृत्यु कहा करते हैं।

अधिअण्डज, अण्डज, पिण्डज तक आते-आते वह कायाभित्ति को पूर्ण रूपेण त्याग देने का गुण विकसित कर लेता है और काया भित्ति मय इन्द्रिय सहित जीवित रखने का संयंत्र पाँच प्राण केन्द्र, सात चार्कों का चक्र विकसित कर लेता है। जब कभी संयंत्र अर्थात् सिस्टम फेल हो जाता है या कि छतिग्रस्त हो जाता है, तब की स्थिति में कायाभित्ति छोड़कर तीसरी चीज मन और असंघनित तत्व (आत्मा) बाहर हो जाता है।

उस प्रथम संयोग की क्रिया-प्रतिक्रिया अब तक में विकसित स्वरूप ही मृत्यु है। कायाभित्ति से अलग होने का गुण तो विकसित हो गया, किन्तु तीसरी चीज जो मन तत्व बन गया उससे मुक्त होना उस असंघनित तत्व आत्मा के लिए महाकठिन सा हो गया है। यही मन विकसित होकर विचार, बुद्धि, प्रज्ञा, विवेक, अहं, काम, क्रोध, लोभ, दम्भ, वासना, आसक्ति, कामना, प्रबल इच्छा आदि के रूप में अपना ताना-बाना बुन चुका भी है और बुन भी रहा है। यह मनकाय की भित्ति संघनित कायभित्ति से और

मजबूत होती है। जिससे असंघनित तत्व (आत्मा) का इससे छुटकारा पाना और कठिन हो जाता है।

इसी से छुटकारा पाने के लिए सफल मानव काया में आया जीव योग ध्यान आदि करके मन के जंजीर को काटने का यत्न करता है। अपने आप मानसिक कायाभित्ति से अलग होना सम्भव उसी प्रकार से नहीं है, जिस प्रकार से कायाभित्ति से अलग होना।

मानसिक काया का गठबन्धन मानसिक काया के कुछ विशेष जगहों पर है जिसे जाने बिना, खोले बिना, मानसिक काया से मुक्ति सम्भव नहीं है। मानसिक काया (तीसरी चीज) से मुक्ति के लिए जागृत अवस्था में लोग योग, ध्यान करके अलग होने का यत्न कर रहे हैं और बहुत कुछ हो भी रहे हैं। मानसिक योनि अमैथुन होती है विलय के पूर्व तक जीव को प्रगट, आभास और प्रभास योनि से होकर गुजरना पड़ता है। इन योनियों में मानसिक काया की इन्द्रियों का क्रमशः क्षरण होता हुआ प्रकाशीय कायाभित्ति तक पहुँचना होता है इस अवस्था में क्षरण होता है मृत्यु नहीं, तब जाकर वह असंघनित तत्व (आत्मा) अपने पैतृक तत्व जो असंघनित होते हुए अनन्त स्वरूप है उसमें विलय हो पाता है जो करोड़ों वर्षों तक में यह लक्ष्य प्राप्त होता है, किन्तु उस अनन्त के अन्त में विलय नहीं होगा, उससे जो अनन्त बन रहा है उस अनन्त में विलय होगा।



मित्र आचार संहिता

मनुष्य के दिमाग में ढाई अक्षर का ज्ञान इतना महत्वपूर्ण है कि आज तक ढाई अक्षर से बढ़कर कोई तीन अक्षर तक का ज्ञान नहीं कर पाया। कबीर साहब के इस सम्बंध में एक प्रसंग भी है –

“पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय। ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।।

जिस प्रकार से ढाई अक्षर का प्रेम है उसी प्रकार से ढाई अक्षर का ‘सत्य’ भी है।

उसी प्रकार ढाई अक्षर का ‘न्याय’ शब्द है उसी प्रकार ढाई अक्षर का यह मित्र शब्द भी है।

जिसने ढाई अक्षर का ज्ञान कर लिया वह सब जान लिया। शेष में अब कुछ नहीं बल्कि वही शेष है जो ढाई अक्षर जान लिया।

- | | |
|--|---|
| (1) मित्रता में आत्म संगम होता है। | (1) गुरुता में ज्ञान मात्र का आदान-प्रदान होता है अर्थात् ज्ञान संगम होता है। |
| (2) मित्रता में भेद-भाव समाप्तप्राय होकर प्रेम का जन्म होता है। | (2) गुरुवाद में वरिष्ठता कनिष्ठता बनी रह जाती है। मात्र भक्ति का जन्म होता है। |
| (3) मित्रता में छोटे-बड़े आदि के भेद समाप्त होकर प्यार का जन्म होता है। | (3) गुरु शिष्य में अनुशासन का जन्म होता है। मने गैर मने अनुशासित रहना होता है। |
| (4) मित्रता में दोनों को ही नहीं सबकी बराबर –बराबर चलती है। | (4) गुरुता में केवल गुरु की चलती है। |
| (5) मित्रता में सत्य-झूठ का संवाद के द्वारा निर्णय हो जाता है। | (5) गुरुता में गुरु जो बोले लिखे वही सत्य होता है शिष्य नाम मात्र का होता है। |
| (6) मित्रता में समर्पण, त्याग, सेवा, उपकार होता है जबकि दोनों पक्षों में लागू होता है। | (6) गुरुता में केवल शिष्य को समर्पण, त्याग सेवा करना होता है। गुरु का शिष्य के प्रति नहीं। |
| (7) मित्र-मित्र एक-दूसरे के प्रति जान तक होम देते हैं और उन्हें इस कृत्य में आत्मशान्ति भी मिलती है। | (7) गुरुता में शिष्य तो गुरु के प्रति जान दे सकता है पर शिष्य के लिए गुरु जान कभी नहीं देते और न ऐसा कोई प्रमाण ही मिलता। |

आत्मा से आचरण प्रवाहित होता है

आचरण बनाकर आत्मा को विकसित नहीं किया जा सकता। आचरण का स्वांग भी अहंकार की पुष्टि ही है। सेवा ही धर्म है। धर्म ही सेवा है। दोनों बातें अपनी जगह पर सही हैं। पर जो सेवा कर रहे हैं उन्हें हम धार्मिक कहें या कि न कहें या जिसे अधिक लोग धार्मिक कह रहे हैं उन्हें हम मान लें कि यह सच्चा सेवादार है।

कहीं ऐसा न हो कि वह प्रोफेशनल सेवक हो जो सेवा का धन्धा बनाये हो। जो समाज में सेवा के नाम धन्धा चल रहा है ये सेवादार नहीं बल्कि और कुछ होते हैं। जिन्हें सेवा करना है वह करेगा ही चाहे कुछ भी हो जाये उसका तो आचरण सेवा है या कि सेवा आचरण है।

जो धंधा बनाकर सेवा कर रहे हैं या कि गुप्त महत्वाकांक्षा का भाव रखकर सेवा कर रहे हैं इस तरह की सेवा से किसी का कुछ हित नहीं होता, ऐसे कृत्य को धर्म कहना उचित नहीं। अगर कोई व्यक्ति धर्म को उपलब्ध हो गया तो उसके जीवन में जो भी होगा वह सब सेवा ही होगा। यहाँ पर सेवा ही धर्म है यह वाक्य गलत है, बल्कि धर्म सेवा है यह वाक्य उचित है।

जो धर्म में जीता है उसका जीवन ही धर्म होता है और उसका आचरण सेवा होता है। उसके जीते जीवन से सेवा निकलती है। उसका जितना जीना है, चर्या है, श्वास है, जाने-अनजाने में सब सेवा बन जाता है। जहाँ हृदय में प्रेम है, वहाँ व्यक्ति में सेवा है। वह फोटो छपवाने अखबार में खबर छपवाने



नहीं जाता, जबकि आजकल कोई सेवक बिना फोटोग्राफर के सेवा नहीं करता। 1947 के पूर्व सेवादारों की जमात ने देश में क्या पलटन खिलायी कि अंग्रेजी हुकूमत को बोरा-बिस्तर बाँधना पड़ा और ठीक 15 अगस्त 1947 के आधीरात के बाद सेवक, सेवक न रहकर मालिक बन गये यह क्या हो गया ?

इन्हीं लोगों के कारण अब तो सेवा करना भी प्रेस्टीज, इज्जत बन गयी है। अब तो लोग संघासंघ में इसलिए आते हैं कि थोड़ा सा सेवा किया कि मंच मिल जायेगा, कुर्सी मिल जायेगी इसके लिए सेवा का स्वांग रचाते हैं।

सेवा भी अब अहंकार तृप्ति का मार्ग बन गया है। सेवा भी अहंकार की चेष्टा के भीतर हो रहा है तभी तो दो सेवकों में से किसी एक की प्रशंसा कर दिया जाये तो दूसरा वाला दुःखी हो जाता है, कैसे मुझसे बड़ा कोई सेवक हो सकता है। इस प्रकार अहंकार से जो सेवा पैदा होती है वह सेवा सिर्फ बहाना है अन्ततः भीतर गहरे में यशकांक्षा, पदप्रतिष्ठा की अहंकार भरी सेवा यात्रा होती है।

जो
आत्मिक
रूपान्तरण से सेवा

होती है वह सहज ही सेवा होती है उसे पता ही नहीं चलता कि मैं सेवा कर रहा हूँ। उसका सहज स्वभाव ही सेवा है। आचरण ही सेवा है। सेवा में प्रेम होता है, धर्म में प्रेम होता है, आचरण प्रेममय होता है।

एक बहन अपने छोटे भाई को कंधे पर

लादकर पहाड़ चढ़ रही थी किसी ने कहा बहुत हांफ रही हो यह तो तेरे लिए बहुत बड़ा बोझ है। जबकि वह काफी थकी थी पसीना बह रहा था। भाई छोटा तो था पर बजनी तगड़ा था।

उस लड़की ने चौंककर बोली दादा जी बोझ तो आप लिए हैं यह तो हमारा छोटा भाई है बोझ नहीं, छोटा भाई बोझ नहीं सेवा ही हो सकता यह तो प्रेम का कृत्य है। लड़की को यह पता ही नहीं कि हम सेवा कर रही हूँ कि धर्म कर रही हूँ। जिस दिन सेवा इतनी निष्काम, सहज, बिना जाने, बिना पता चले सेवा होती है-तो यही सेवा धर्म है।

“लेकिन ऐसी निष्काम सेवा तभी सम्भव है जब भीतर का धर्म उदय हो। भीतर का धर्म जगा हो तो जीवन ही सेवा बन जाता है।”

लेकिन संसार में महात्माओं, समाज सुधारकों द्वारा समझाया जाता है कि-सेवा करने का व्रत लो, जब तुम बाहर जीवन सेवा का बना लो तो भीतर धर्म का जन्म हो जायेगा। ऐसा कभी नहीं हो सकता लाख सेवा का मन बना लो, मन धार्मिक नहीं हो सकता। जीवन में जो भी क्रान्तियाँ आयी हैं बाहर से भीतर की तरफ नहीं

होती हैं जीवन की सारी क्रान्तियाँ भीतर से बाहर की तरफ होती हैं। अगर आप कमरे के भीतर दिया जला दो अंधकार अपने आप हट जायेगा। लेकिन अगर आप ये कहें कि कमरे से अंधकार हटा दो तो दीपक स्वमेव जल जायेगा यह फिजूल की बातें होंगी।

भीतर प्रकाश जले यदि धर्म का तो उसकी किरणें जीवन को, आचरण को, सेवा बना देती हैं। लेकिन जो इस भूल में है कि हम जीवन को सेवा बना लेंगे तब हमारे भीतर की आत्मा रूपान्तरित हो जायेगी यह भूल है। यही हाल इस संसार में चल भी रहा है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि आत्मा तो दिखायी नहीं पड़ती, आचरण दिखायी पड़ता है। आचरण बाहर होता है, आत्मा भीतर होती है, जो सिर्फ अपने को दिखायी पड़ती है जो व्यक्ति है, दूसरे को नहीं दिखायी देती, दूसरे को तो व्यक्ति का आचरण दिखायी देता है। मैं भीतर क्या हूँ वह तो किसी को दिखायी नहीं पड़ता लेकिन मैं जो करता हूँ वह तो सबको दिखता है इसलिए मुझे ऐसा करना चाहिए ऐसी समझाइस और सुझाव भी धर्माचारियों, सुधारकों का रहता भी है। लेकिन जो भी आप करते हो वह आपके होने से आता है, आप पर थोपने से आप द्वारा होता है जो झूठा व असत्य है।

“यदि यह आपको समझ में आ जाये कि मेरे करने से मेरा होना नहीं निर्मित होता, मेरे होने से मेरा जीवन, मेरा कर्म निकलता है, मैं जो हूँ वह मेरे करने में आता है।”

कर्म से आत्मा निर्मित नहीं होती, कर्म से विद्या की प्राप्ति होती है और विद्या से आत्मा निर्मित होती है। उसी प्रकार आचरण से आत्मा निर्मित होती है। आत्मा से आचरण प्रवाहित होता है। आचरण करके आत्मा नहीं जाना जा सकता। आत्मा से आचरण लाया जाता है। जिस प्रकार से आत्मा निर्मित होती है, उसी प्रकार से हम आचरण करते हैं।

एक्टिंग, अभिनय से आत्मा में रूपान्तरण नहीं होता। आचरण के आरोपण से, थोपने से कोई राम, गाँधी, महावीर, मूसा नहीं बन सकता। लोग किसी आचरित का तुरन्त आचरण करने लगते हैं और

वैसा ही बनने का स्वाँग रच लेते हैं। जैसा आप अपने ऊपर आचरण थोपे हो वैसा कभी नहीं बन सकते, किन्तु जो हो जैसी आपकी आत्मा है वह आचरण कर सकते हो। और देर-सबेर थोपा आचरण छोड़कर आप वही करते भी हो।

यह नासमझी है, इससे जीवन को नुकसान ही हुआ है फायदा कुछ भी नहीं हुआ है “बाहर की नकल से कभी भी कोई भीतर का असल नहीं पैदा हो सकता। भीतर का असल पैदा होता है साधना, समाधि और स्वबोध से” सेवा महत्वपूर्ण नहीं है महत्वपूर्ण है वह हृदय जहाँ से सेवा प्रवाहित होती है। अगर वह दिल न हो तो भी व्यक्ति सेवा कर सकता है लेकिन वह सेवा हितकर नहीं होती अमंगल सिद्ध होगी।

शुभ सूचना

देश के प्रत्येक मित्रमण्डल के सदस्यों, पत्रिका के पाठकों और ग्राहकों से आग्रह है कि वे अपने समस्या के साथ अपना पासपोर्ट साइज का फोटो, आई.डी., पूरा पता, मोबाइल नं. अवश्य भेजें।

साथ ही यदि आप कविता सृजन करते हों, लेख, शोध का सृजन करते हों तो अपने दो चार जो चन्द पंक्तियाँ आप सृजन करते हों तो उसे भी भेजने का कष्ट करें। आपके उच्च विचारों से पूरे देश के मित्र जनों को अवगत कराया जायेगा। ताकि आपके जीवन का दायरा देशव्यापी होकर विश्वव्यापी होता चलें।

—प्रकाशक

मजहबी मन अवैज्ञानिक अधिक है

हर मजहब में जिन्दा आदमी को मार डालो और मरे आदमी की पूजा करो का विधान दिखता है। उससे छूटने के रास्ते और उससे बचने के रास्ते भी बताये जाते हैं। फिर पूजा भी उसी की करते हैं जो बहुत अधिक सताये गये होते हैं। पूजा मानसिक रूप से पश्चाताप है। जो समाज ने उन्हें पीड़ा दी है, उनके साथ अपराध किया है, वह जो भीतर पाप है, उस पाप का पूजा के रूप में प्रायश्चित्त चलता है।

ऐसी पूजाएँ हजारों-हजार साल तक चलती हैं। फिर अनुयायी लोग इस पूजा के 'कारण पर' हम सोचने-विचारने को राजी नहीं होते। इसी प्रकार सताने के वक्त भी हम सोचने-विचारने के लिए राजी नहीं हुए थे। राम जिन्दा रहे, कृष्ण जिन्दा रहे, मुहम्मद जिन्दा रहे, ईसा जिन्दा रहे, सुकरात जिन्दा रहे, गाँधी जिन्दा रहे, गुरु गोविन्द जिन्दा रहे, अम्बेडकर

जिन्दा रहे, तब हम सोचने विचारने के लिए राजी नहीं रहे। उन्हें गालियाँ देते रहे, पत्थर मारकर, जहर खिला कर, क्रूस पर चढ़ाकर, गोलियाँ खिलाकर, तलवार उठाकर, उनके बीच घृणा की दीवार खड़ी करके विचार करने के लिए राजी नहीं रहे जब सता लिया, मार लिया, दफना दिया, तब अब पूजा की दीवार खड़ी करके सोचना विचारना बन्द करके बस पूजा ही काफी है में रम गए, ऐसी है अवैज्ञानिक मानसिकता।

जब महापुरुष जिन्दा रहते हैं तब दुनिया के लोग या तो गोली मारते हैं या कि गाली देते हैं, जब मार लेते हैं या कि मर जाते हैं तब फूल चढ़ाते हैं, लेकिन महापुरुषों के संबंध में सोचते कभी नहीं हैं। मजहबियों का विचार नैतिक तो रहता है, किन्तु वैज्ञानिकीय नहीं अर्थात् अवैज्ञानिक रहता है। अधिकतम् अनुयायियों का व्यक्तित्व वैज्ञानिकीय नहीं होता।



मजहबी पूजा कोई क्रान्ति नहीं है और न ही जीवन ही बदलता वह तो पाप का प्रायश्चित स्वरूप मात्र पूजा भर है। दुनिया के पुराने विचारों को डर्विन का विकास बाद इतना धक्का दिया कि दुनिया का अब वह विचार नहीं हो सकता जो डर्विन के पहले था। पर अभी भी मजहबी लोग डर्विन की 'ओरीजन ऑफ स्पेसीज' नहीं पढ़ते।

भाग्यवादी, ईश्वरवादी लोग मार्क्स की दास कैपिटल पुस्तक नहीं पढ़ते। जिससे समाज के लिए एक नयी क्रान्ति, नयी समानता परक सामाजिक व्यवस्था, अर्थव्यवस्था की आवश्यकता की बात की गयी है। समानता परक समाजवाद और विकास परक मजहब वाद के संस्कार, मजहबी कट्टर उलेमाओं मौलानाओं, साधु-सन्तो महाराजों, पोपो फादरों पर नहीं पड़ता।

लोग डरते हैं कि विज्ञानवाद से धर्म टूट जायेगा, वे अवैज्ञानिक होकर धर्म की रक्षा करते हैं और विज्ञानवाद का विरोध करते हैं। उनकी घोषणाएँ है कि पैगाम-ए-मजहब-खुदा का भेजा हुआ है जिसे अमुक अवतारी, नबी, रसूल, फरिश्ते ने धरती पर आसमान से नीचे उतारा है। इसमें कोई वैज्ञानिकता सिद्ध नहीं होती, पर वे सब मजहबी मानने के लिए तैयार नहीं हैं।

जब विज्ञान होता है वहाँ नयी क्रान्ति तो होती ही है और क्रान्ति से पुराने सड़े गले मिथक टूटते हैं और नयी खूबसूरती आती है पर इससे मजहबी डरते हैं। अधिकतम दुनिया के मजहब अवैज्ञानिकता के पक्षधर ही रहे हैं। वे वैज्ञानिक तरीके से सोचने का ढंग तक विकसित नहीं करते और तो और।

इतना हम जरूर कहेंगे कि पाश्चात्य क्षेत्र में

डर्विन, मार्क्स, साइमन, पूरिये, आवेन, बर्नाडशा के कारण चर्च, पोप के मिथक टूटे हैं और नयी वैज्ञानिकीय क्रान्ति आयी है। इस्लामी, जैनी, हिन्दू, पारसी में नयी तकनीक का बिल्कुल अभाव है। इस्लाम तो आज भी जन्नत, जहन्नुम, कयामत के भय से उबर ही नहीं पा रहा है। उसको इस संसार में रत्तीभर भय नहीं लगता किन्तु बहिश्त के दण्ड से इतना भयभीत है कि इस धरा पर से चाहे सारी मानवता ही मिटा देना हो वह मिटाने की हिम्मत जुटा लेगा, किन्तु जहन्नुम के आग के शोले, कोड़े, जहरीले जानवरों के कल्पित डर से अपने को उबार ही नहीं पा रहा है।

आज भी इस वैज्ञानिकीय दुनिया में उनकी सोच बचकानी व अवैज्ञानिक लगती है। हिन्दू का परलोक-स्वर्ग-नरक बैकुण्ठ ऐसा है जैसा कि खुदा का महल। जिसे खुदा छोटी सी पूजा-पाठ में उसे दे देगा।

हिन्दुस्तान के पास प्रतिभा की कमी नहीं है। बुद्ध, नागार्जुन, शंकर, बृहस्पति जैसे अद्भुत प्रतिभाशाली लोग हुए हैं, लेकिन भारत में एक भी आइन्स्टीन, एक भी डर्विन नहीं पैदा हुआ कि भारतीय सोच को वैज्ञानिकीय में बदल देता। गाँधी हुए, हेडगेवर हुए, अम्बेडकर हुए, ये सबके सब नैतिक व्यक्तित्व के धनी प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। वैज्ञानिकीय सोच के नहीं थे।

भारतीय और अरबीय सोच अधिकतम विज्ञान विरोधी रही है। विज्ञान किसी भी चीज को तर्क युक्त ढंग से सोचता है, मजहबी सोच में तर्क तथ्य प्रमाण की जगह, आस्था, इमान, विश्वास, श्रद्धा, भावना से काम चल जाता है। यदि इन पर तर्क तथ्य किसी ने लगाया तो चिल्लाने लगते हैं कि आस्था पर प्रहार हो रहा है, भावना श्रद्धा पर प्रहार हो रहा है-इन्हें सजा दो। यह

बात तो ईश निन्दा में आती है इसे मौत की सजा दो, फतवा जारी करो। यह कौन होता है ईश पर पर उंगली उठाने वाला ? पर मजहबी ये कभी नहीं कहता कि हम कौन होते हैं ईश की रक्षा करने वाले ? ईश तो अपनी रक्षा स्वयं कर लेगा। यह कितनी बचकानी भारी अवैज्ञानिक सोच है।

कोई अकस्मात घटना घट जाये तो मजहबी लोग उस अत्याचार के परिणाम स्वरूप खुदा द्वारा भेजी घटना की घोषणा कर देते हैं। परलोक का दण्ड विधान स्वयं से बनाकर संसार को इतना डरा दिये हैं कि – “सारे दुनिया के बने विनाशकारी बम, बारूद, मिसाइलें क्यों न उसके सिर पर डाल दिये जायें वह इस कष्ट के लिए सहर्ष तैयार हो जायेगा, किन्तु—नरक, जहन्नुम के कष्ट को वह नहीं सह सकता, उससे इंसान इतना डर गया है कि मजहब का भगवान ही सबकुछ उसके लिए हो गया है, जबकि यह अज्ञात का थोपा हुआ डर है।”

परलोक अज्ञात है, ईश्वर अज्ञात है, मजहब अज्ञात है, प्रकृति की शक्ति अज्ञात है— फिर इससे डरने की बात ही क्या है जो अज्ञात है, जो वर्तमान में दिख रहा है समझ में आ रहा है उस पर नैतिक तरीके से वैज्ञानिक तरीके से स्वीकार कर जीवन का विकास करना चाहिए।

ईश्वर की वाणी किसी से कुछ भी नहीं कहती हमेशा अपने अचेतन चित्त की आवाज सुनायी पड़ती है। हमारा भीतर का मन हमसे कुछ कहता है, लेकिन मेरे भीतर का मन कुछ कहे इस कारण वह भी सत्य नहीं हो जाता कि मेरे भीतर का मन ने कहा है इसलिए सत्य है। मेरे लिए सत्य हो सकता है लेकिन दूसरे के लिए सत्य कहने का हकदार मैं नहीं हूँ।

जो अपने अन्तरवाणी पर ज़िद करते हैं, वह उनकी उनके लिए उनकी अन्तरवाणी है न कि सबके लिए। यदि हम अपनी अन्तरवाणी को दूसरों पर थोपते हैं तब वह अवैज्ञानिक होती है। अपनी अन्तरवाणी का यदि हम किसी पर या कि समाज पर दबाव डालते हैं तब वह भी विज्ञानवाद के लिहाज से हिंसा ही है। दबाव कोई भी किसी भी प्रकार का हो वह अहिंसा नहीं है। वह हिंसा ही है। बिना अस्त्र-शस्त्र की हिंसा है।

“जो ये कहते हैं कि मेरी अन्तरवाणी ईश्वर की आवाज है। कौन है हकदार यह कहने का कि मेरी अन्तरवाणी ईश्वर की आवाज है ? यही तो आज तक दुनिया का भारी नुकसान पहुंचाने का पथ रहा है।”

अन्तरवाणी तो अपने अन्तर की अपने लिए होती है। मुहम्मद साहब कहते हैं कि मेरी अन्तरवाणी ईश्वर की आवाज है, वेदों के ऋषि कहते हैं कि मेरी अन्तरवाणी ईश्वर की आवाज है, ईशा कहते हैं कि मेरी अन्तरवाणी गॉड की आवाज है, इसी प्रकार तो सारी दुनिया के लोग भी दावा करते हैं कि मेरी अन्तरवाणी भी ईश्वर की आवाज है। फिर वेद पुराण के कारण झगड़े का कोई कारण नहीं रह जाता। सत्य जो था वह तो निर्णीत स्वमेव हो गया। यह है वैज्ञानिकता।

मजहबों में अन्तरवाणी का द्वन्द्व बड़ी मुश्किल बात हो गयी है। कौन तय करे कि अन्तरवाणी किसकी है ? अन्तरवाणी से समाज संचालित नहीं होते। हाँ यदि किसी व्यक्ति को अपनी अन्तरवाणी ठीक मालूम पड़ती है तो वह अपने जीवन को जिस भाँति चाहे संचालित करे। लेकिन जैसे ही वह दूसरे से कोई बात कहता है वैसे ही तर्क, विवेक और विचार की कसौटी पर बात कही जानी चाहिए। अन्यथा हम समाज को अंधकार में धकेल देंगे।

महात्मा लोग विज्ञान विरोधी होते हैं



महात्मा का मतलब कोई महान् आत्मा नहीं बल्कि महान् आदर्श परायण आचरण, महान् नैतिकता, महान् सच्चाई, महान् सोच, व्यापक दृष्टि कोण होता है। आत्मा की लंबाई/चौड़ाई तो मानव मात्र की ही नहीं जीवमात्र की एक ही समान तत्व वाली होती है। जिसका मानसिक जगत जितना विकसित समुन्नत हो जाता है, वही महान् कहलाने लगता है।

काया और आत्मा को किसी भी प्रकार से नहीं बदला जा सकता केवल मानसिकता को तब्दील किया जाता है। व्यक्ति काया नहीं है उसके भीतर विराजमान, विचारणा, धारणा, भावना का समुच्चय संगम ही व्यक्ति है।

कभी-कभी देखने में आता है कि काया जिन्दा है, आत्मा उसमें घुसी है, किन्तु उसे खाने-पीने चलने बोलने की क्रिया बन्द है वह देखता है पर बोलता नहीं है ऐसी अवस्था में मानसिकता की ताकत समाप्त प्राय हो जाती है। काया और आत्मा का संगम तो है किन्तु मानसिकता का हास्व को जाने मात्र से वह जड़वत् पड़ा है।

शिक्षा-दीक्षा, सत्संग, उपदेश आदि से व्यक्ति की मनोदशा बदली जाती है, काया और आत्मा नहीं।

विज्ञान और कुछ नहीं तर्क तथ्य युक्त विचारणा है। विचारणा व्यक्ति की मनोदशा है जिस मनोदशा में तर्क तथ्य स्वीकार नहीं होते, वहाँ विज्ञान का जन्म नहीं होता। वहाँ की समाज कूप-मण्डूप लकीरवादी अंधविश्वासी होती है। वहाँ की प्रतिभा में

विज्ञान का जन्म नहीं होता।

कई प्रमाण है कि जन्मे छोटे बच्चे को भेड़िया उठा ले गया और उसे अपने तरीके से पाल-पोस कर अपने जैसा चार पैर से चलना सिखा देता है फिर वही मनुष्य का बच्चा भेड़िये जैसा व्यवहार करने लगता है, कच्ची माँस खाता है मनुष्य ही क्यों कोई शिकार देखकर उस पर झपट पड़ता है, भेड़िया की तरह से हाँथ-पैर मिलाकर चार पैर की तरह से चलता है। बालक की मनोदशा बदल दी गयी वह आज मानव शकल में होते हुए भेड़िया है।

नाक कान गला के डाक्टर है पर छींक आने पर रुक जाते हैं उसे अशुभ मानते हैं, इन्जीनियर हैं पर अपने माकान के ऊपर काले पेन्ट से रंग कर घड़ा लटकाये हुए हैं ताकि माकान में किसी की नजर न लग जाये। गाड़ी मालिक है गाड़ी चाहे तो शेर-हाँथी को दबा दे पर एक बिल्ली का रोड क्रास कर जाना उन्हें अशुभ हो जाता है। युनिवर्सिटी के छात्र हैं पर सड़क में बैठे किसी ज्योतिषी से हाँथ की रेखा दिखाकर भाग्य ढूँढ़ रहे हैं। पढ़े-लिखे स्नातकोत्तर से भी आगे हैं पर किसी पांचाग वाले के दरवाजे पर बेटी की शादी का मुहूर्त माँग रहे हैं, गृह-प्रवेश में पंडित का इन्तजार कर रहे हैं, अपना भाग्य पंडित के पांचाग, राशिफल में ढूँढ़ रहे हैं। कर्म कौशल का महत्व भूल रहे हैं।

भारत में पीछे लौटने और लौटाये जाने वाले लोगों की लंबी परम्परा है। इन सन्त महात्माओं के कारण भारत की आत्मा विकसित नहीं हो पाती है। भारत की आत्मा जब तक इन तथाकथित सन्त-

महात्माओं से मुक्त नहीं होती तब तक भारत के पास एक वैज्ञानिक प्रतिभा का जन्म नहीं होगा।

पीढ़ी तो नयी है पर रामायण काल, कृष्णकाल, बुद्धकाल मुहम्मद काल की ओर सन्त महात्मा खींचे चले जा रहे हैं। इन्हे वर्तमान में कुछ दिखायी नहीं देता। रेलगाड़ी हवाई जहाज की जगह सन्त महात्मा बैलगाड़ी का वर्णन करते हैं। जितना विज्ञान विकसित होगा, उतना ही तर्क तथ्य भी विकसित होता चला जायेगा, जिससे अंधविश्वास पर खड़े गढ़ गिरने लगते हैं। विज्ञान का विकास तथाकथित धार्मिक आदमी को भयभीत करती है क्योंकि उसकी बुनियाद अतर्क अंधविश्वास पर खड़ी है, इसलिए वे चाहते हैं कि विज्ञान विकसित न हो। जिससे आँख बन्द कर आदमी महात्माओं के पीछे चलता रहे। ताकि हजारों सालों की भरी सड़ी-गली बाती चाहे सही हों या गलत व्यक्ति ढोता रहे। उसमें सन्त महात्माओं को मेहनत भी नहीं करना पड़ता। ये आदमी को मानसिक गुलाम बनाते हैं। विज्ञान यह गुलामी तोड़ देता है इसलिए दुनिया के सन्त महात्मा बुनियादी रूप से विज्ञान के विरोधी होते हैं।

हजारों सालों से सन्त महात्मा केवल वही मरी बात को दुहराये चले जा रहे हैं। आज जो कभी की झूठी बात थी हजारों साल में दुहराते-दुहराते सत्य समान हो गयी है, उसे पीढ़ी के गले से निकाल पाना बड़ा मुश्किल हो गया है।

साधु सन्त क्रान्तिकारी नहीं होते वे तो केवल मूर्ति माला मन्दिर, माना हुआ भगवान को बचाने के लिए झगड़ा मात्र करते हैं। क्रान्ति तो दिल में आती है जो नया परिवर्तन कर देती है। भारत के इतिहास में बुद्ध के बाद कोई नयी क्रान्ति आयी ही नहीं। पुरानी बातों पर नक्कासी, लीपा-पोती का पलस्तर चल रहा है। भारतीय मन समझौतावादी है, क्रान्तिकारीवादी नहीं। क्रान्ति का मतलब खून बहाना नहीं। क्रान्ति तो विचारों में आती जो दिल से निकलकर मानसिकता

को बदल देती है, वह है सच्ची क्रान्ति।

सुकरात, डर्विन, मार्क्स, लेनिन, प्लूटो, अरस्तू, बुद्ध, ईशा ने खून नहीं बहाया पर क्रान्ति कर दी।

हिन्दुस्तान में अंग्रेजी हुकूमत चली गयी वे अपने पूँजीपति के बल से राज्य कर रहे थे। किन्तु वे भारतीय पूँजीपतियों के हाथ में सौंप कर चले गये। हिन्दुस्तान का क्या बदला अंग्रेज पूँजीपति के जगह हिन्दुस्तानी पूँजीपति आ गये, लेकिन हिन्दुस्तान के गुलामी में कोई फर्क नहीं आया। आज भी बहुसंख्यक लोग अपने अधिकार के लिए संघर्ष कर रहे हैं। पूँजीपति किसी का नहीं होता पर अंग्रेज पूँजीपति तो गाँधी के प्रति सदा रहे दया किये पर भारत के पूँजीपति तो गाँधी को जिन्दा न रहने दिये। ये कोई क्रान्ति नहीं रही यहाँ तो केवल समझौता हुआ क्रान्ति कहाँ हुई यदि क्रान्ति हो गयी होती तो भारत नया हो गया होता। आज भी धर्म, सत्ता, समाज के नाम जाति-पाँति, सम्प्रदाय की गोष्ठियाँ हो रही हैं, नित नये संगठन बन रहे हैं उन संगठनों के आदर्श वही मरे हुए लोग हैं। जो धरती छोड़कर कभी के चले गये। भारतीय पीढ़ी को कोई क्रान्तिकारी नया आदर्श ही नहीं मिल रहा है, ऐसी मरी हुई आत्मा का भारत हो गया है।

ईमानदार, क्रान्तिकारी, निष्ठावान नैतिक पीढ़ी को गढ़ने का काम इन समाज सुधारकों ने ले रखा था जिन्होंने मेहनतकाल, जोखिम उठाने से बचने के लिए लाल-पीला कपड़ा पहनकर पलायन कर गये। मैदान ही छोड़ दिया अब क्रान्तिकारी, वैज्ञानिक प्रतिभा कहाँ से पैदा हो? इसके लिए इन सन्त महात्माओं, उलेमाओ, मौलवियों, पोपों से मुक्त होकर नयी पीढ़ी में वैज्ञानिक मानसिकता का उदय करना होगा। यह काम संयुक्त विश्व धर्म संघ ने उठाया है भारतीय युवाओं का आह्वान है वे पधारे और अपने मनोदशा को बदलें, पुरानी बातें सब शान्त चिता की हड्डी हो गयी हैं, उनसे न डरें।

चलो आगे – सोचो पीछे

हमारा देश अतीत में सो गया है। उसे तीव्रता से जगाने की जरूरत है। देश में लाखों वर्षों की जो जंजीरे इकट्ठी हो गयी हैं, उसको नष्ट करने के लिए एक आन्दोलन की जरूरत है। उन सब जंजीरों को तोड़कर देश को नये जगत में लाकर खड़ा करना है।

लेकिन हमारे देश के धर्मनेता, महात्मा, राजनेता, पूर्वज, समाज सुधारक वे सब अतीत की ओर घसीटते हैं, वे नयी पीढ़ी को मुक्त ही नहीं होने देते। तीन सौ वर्ष का इतिहास लिए अमरीका कहाँ चला गया इसका एक ही कारण है-अतीत से मुक्ति। जिस पीढ़ी के पास अतीत का बोझ नहीं है, केवल भविष्य है, केवल वर्तमान है उसकी चेतना विकसित होगी ही, वह नया हौसला त करेगा और जो करेगा नया करेगा।

अमेरिका के पास कोई अतीत नहीं है उसकी पीढ़ी की उमर ही तीन सौ साल की है। इसलिए अमरीका की सबसे नयी कौम सबसे अधिक समृद्ध है, सबसे ज्यादा विकासशील है, सबसे ज्यादा जवान है, उसका और कोई राज नहीं है, उसके

पीढ़ी के ऊपर मुर्दों का बोझ नहीं है सिर्फ भविष्य है।

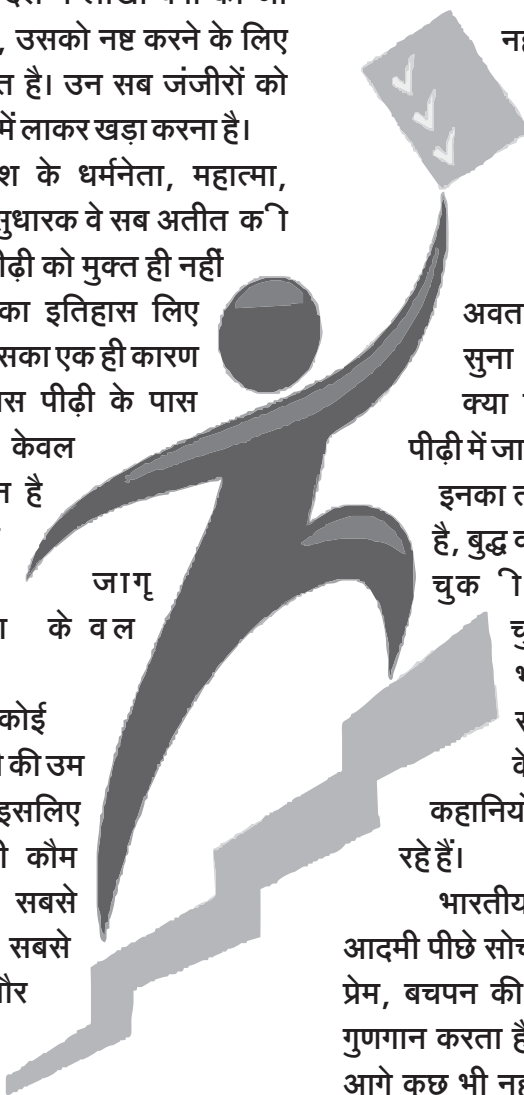
भारत का अतीत का मोह जब तक नहीं खत्म होगा तब तक उसके विकास की आँखें नहीं खुलेगी। लेकिन हमारे देश के समझदार लोग तो पीढ़ी को खींचकर ही नहीं घसीटकर- सतयुग में ले जाने को कहते हैं।

राम, कृष्ण, बुद्ध, तीर्थाकरो, अवतारियों, नवियों की कथा किस्से सुना- सुना कर नयी पीढ़ी को गढ़ना चाहते हैं। क्या इन अतीत के किस्से कहानियों से

पीढ़ी में जागरण होगा सम्भव है ?

इनका तो मानना है कि गीता लिखी जा चुकी है, बुद्ध वचन कहे जा चुके हैं, कुरान लिखी जा चुकी है, रामायण-महाभारत लिखा जा चुका है, सब कुछ हो गया, हमारा भविष्य का अब कुछ नहीं है। हमारा सब कुछ अतीत में हो गया है। अब तो केवल बैठकर चुगाली करना है। कथा- कहानियों की चुगाली आप रात-दिन कर भी रहे हैं।

भारतीय पीढ़ी बूढ़ी हो गयी है, जैसे बूढ़ा आदमी पीछे सोचता है, बचपन की गीता, जवानी का प्रेम, बचपन की स्मृतियाँ सोंचकर उसका रातोदिन गुणगान करता है, वह उन्हीं में खोया रहता है उसके आगे कुछ भी नहीं रहता। उसी प्रकार जो कौम आगे



नहीं सोचती उसकी आत्मा बूढ़ी हो जाती है।

बूढ़े होने का लक्षण ही है, पीछे देखना, युवा होने का लक्षण है विकासमान होना। यदि हम ये कहें कि हिन्दुस्तान का भगवान हिन्दुस्तान की पीढ़ी के साथ अन्याय किया, भारतीयों की खोपड़ी में पीछे आँख लगानी चाहिए था। क्योंकि हर भारतीय चलता आगे की ओर है और सोचता पीछे की ओर है।

भारतीयों को आज तक किसी ने नहीं बताया की पीछे लौटना असम्भव है। काल की, जीवन की गति आगे की है पीछे की नहीं। मुसलमान चौदह सौ वर्ष की शरीयत लागू करना चाहते हैं। उनके सामने तो भविष्य भर सा गया है। मुहम्मद और कुरान सब कुछ हो चुकी है। सारे संसार के मुसलमान कुरान और मुहम्मद से आगे और क्या है—सोचना तक गुनाह समझते हैं, जबकि उन्हें यह नहीं पता कि एक क्षण पीछे नहीं लौटा जा सकता है, हमेशा आगे ही जाना

होता है। जितना ही आप पीछे की याद करेंगे उतना ही आगे चलने में बाधा पड़ेगी। क्योंकि पीछे की याद करने वाला मन आगे चलने वाले कदमों से टूट जाता है, वह दिग्भ्रमित होकर विसंगति के जीवन में चला जाता है और धीरे-धीरे वह जड़वत हो जाता है यही लोग आगे चलकर नया सोचने वाले के लिए शत्रु बनते हैं और खूनी रिमोड बनकर टूटते हैं, खुद मरते हैं और दूसरों को मारते हैं।

यही पूर्वाग्रही सोच वाले संगठन में शामिल होते हैं और आतंकवादी बनते हैं। इन्हीं अतीतवादी लोगों के कारण दुनिया में अशांति भरी हुई है। आज हम विकास करने की बजाय पुरानत सड़ी-गली बातों को सहेजने, ढोने एवं मानने में ही पूर्ण संतुष्ट महसूस करते हैं। अब हमें इन सब बातों को छोड़कर नवीन मानसिकता बनाकर आगे बढ़ना होगा तभी हमारे साथ-साथ देश-समाज का भला हो सकेगा।

‘कुछ आप कहें कुछ हम कहें’

मित्रवर जी हैण्डपम्प पर स्नान कर रहे थे कि एक आदमी सुबह-सुबह आया बोला हमारा छोटा सा बालक कई दिनों से गुम गया है हफ्ते बीत रहे हैं सब जगह खोज डाला उसका कहीं पता नहीं चल रहा है। कुछ लोगों ने कहा कि आश्रम के महाराज से जाकर पूछिये वे अवश्य कुछ बतायेंगे। मैं काफी देर से आश्रम में महाराज जी को ढूँढ़ रहा हूँ, कोई बताता नहीं, आप बताइये महाराज जी कहाँ हैं।

मित्रवर जी ने कहा कि आपका काम होना चाहिए न, जाइये कल शाम को आपका बच्चा आपके घर आ जायेगा। तब पर भी वह नहीं मान रहा था। मड़रैच गाँव का रहने वाला था। जिद्द पर जिद्द किये जा रहा था कि—महाराज को बताइये, महाराज को बताइये। जब उसे महाराज नहीं मिले और समझ भी

नहीं पा रहा था कि—यही है जो सर्व सामान्य की तरह स्नान कर रहे हैं। ठीक-शाम को उसका बच्चा घर आ गया। वह अपने अबोध बालक को पाकर इतना प्रसन्न हुआ कि सुबह आश्रम में महाराज से पुनः मिलने आया।

हम लोगों से पूँछा कि ओ महाराज जी कहाँ है जो इस आश्रम के मालिक हैं। हम लोगों ने उसे बताया कि वही महाराज हैं जो परसों आपको हैण्डपम्प पर स्नान करते मिले थे।

उसने सिर पर हाँथ रखा बोला इतना सहज-सरल एक आम आदमी जैसे थे, मैं सोचा ये कोई महाराज कैसे हो सकते हैं। उन्हें हम पहचान नहीं सका। वह जब आया मित्रवर जी किसी काम से बाहर जा चुके थे।

—सम्पादक मण्डल

करें स्वयोंग पूर्ण करें मनोकामना

माना वाले भगवान से, विश्वास वाले भगवान से, मन्दिर वाले भगवान से, पोथी वाले भगवान से, आसमान से उतरने वाले फरिश्तों से, उत्तम और सरल है अपना जाना हुआ भगवान।

यदि हमारे भीतर वाला भगवान न होता, हमारा जीवन न होता, तो इस दुनिया वाले भगवान का हमारे लिए क्या अस्तित्व होता? जब हमारा ही अस्तित्व न होता तो ईश्वर का यदि अस्तित्व होता भी तो हमारे किसी मूल्य का नहीं था। अर्थात् हमारा होना ही हमारे लिए मूल्यवान है।

हमारे इस काया के भीतर का भगवान यदि निकल जाता है तो किसी भी मन्दिर मस्जिद चर्च का भगवान, किसी पोथी का भगवान, किसी महाराज का भगवान इस काया को पुनः जीवन नहीं प्रदान कर सकता। यदि महाराजों के भगवान, मन्दिरों के भगवान जिन्दा करते होते तो इनके दरवाजों पर मुदों की भीड़ होती।

यदि ये सब महाराज और महाराज के भगवान और उनके कर्मकाण्ड दुःख दैन्य हटा सकने में सफल हुए होते तो आज धरा से दुःख-दैन्य कभी का विदा हो गया होता। किन्तु ऐसा कहाँ हुआ इतिहास गवाह है। सदियाँ गुजर गयीं पूजा पाठ करते-करते, अर्चन वन्दन करते-करते, महाराजों के चरणों में पड़े-पड़े, पर शान्ति नसीब नहीं हुई। दादा-परदादा तक यही करते रहे और हम भी वही

कर रहे हैं और आने वाली अपनी पीढ़ी को भी वही सिखाकर जा रहे हैं।

तन दिया, मन दिया, समय दिया, धन दिया, प्रतिभा दिया पर पाया क्या? केवल क्षणिक मन की खुजली जरूर शान्त हुई इसी को हमने पुण्य मान लिया। यह तो सहज आत्मा का स्वभाव है जिसमें देने में एक प्रकार की शान्ति खुशी आती ही है। पर जीवन तक वह शान्ति खुशी क्यों नहीं रही।

इसका कारण यह था कि-जो है ही नहीं, जो हमारे लिए अज्ञात है, जिसका हमारे सुःख दुःख से कोई सम्बन्ध ही नहीं है, जो हमारे स्वत्व का अंश ही नहीं है उनका स्वत्व हमसे कोसों दूर है उन्हें हम जबरन अपना बनाने के लिए दौड़ रहे हैं या उस अज्ञात चीज को हम पूजापाठ कर्मकाण्ड प्रार्थना में ढूँढ़ रहे होते हैं। यह एक पागलपन नहीं तो क्या है? यदि पूजा पाठ कर्मकाण्ड प्रार्थना से, अर्पण-वन्दन से किसी छोटी से छोटी चीज का सृजन होता हुआ होता तो देवता भगवान का भी सृजन होता। जब मन्त्र, प्रार्थना, कर्मकाण्ड से एक फूल एक बीज एक सुई तक नहीं सृजी जा सकती तो क्या अदृश्य से कुछ प्रगट किया जा सकता है?

यदि अदृश्य से कुछ सृजा जा सकता है तो वह तरीका कर्मकाण्ड नहीं स्वयोग है, स्वबोध है, स्वज्ञान है.....।

मित्रमण्डल

समाज में अपने को स्थापित करने के लिए तरह-तरह के मण्डल बनते आ रहे हैं, किन्तु अभी तक मित्रों को मित्रों के बीच स्थापित करने का मण्डल नहीं बना। अभी तक ऐसा कोई अभियान किसी के द्वारा नहीं चलाया गया जहाँ पर मित्रों को तलाशा जाकर उन्हें गले से गले लगाया जाये और सुख-दुःख में मिल जुलकर हँसती-हँसाती जिन्दगी जिया जाये। मित्र अपने बीच मित्र को पाकर सारा दुःख भूल जाता है। सच्चा मित्र ही एक ऐसा मूल्यवान हीरा होता है जिसे हर तरह से भुनाया जा सकता है। सच्चे मित्रों के बीच में कोई औपचारिकता नहीं होती केवल आत्मावलिंगन होता है। आत्मा आलिंगन में किसी भी प्रकार का शिष्टाचार-औपचारिकता की आवश्यकता नहीं होती। मित्रों के बीच मित्र मिलकर दो नहीं, तीन नहीं, चार नहीं बल्कि एक हो जाते हैं। मित्रों के बीच में काया अनेक होती है, किन्तु सबकी संगम आत्मा एक हो जाती है।

इसी उद्देश्य को लेकर विश्वशान्ति समन्वय मिशन ने मित्र महोत्सव अभियान चलाया है जिसमें धर्म सम्प्रदाय लिंग जाति आदि का भेद हटाकर सर्वधर्म मित्र महोत्सव नाम दिया गया है। इसी अभियान के तहत हम अपने मित्र परिव्राजकों के साथ आप से गले से गले मिलने के वास्ते मित्रमहोत्सव कर आपके दरवाजे पर आकर गले से गले मिला था- पुनश्च-पुनश्च याद करना हमारा कर्तव्य है।

मित्रमण्डल-वार्ड 3, उचेहरा नयी बस्ती (संजय नगर), जिला-सतना (म.प्र.)

आपके बीच ठहरा था, खाना खाया, आपके बाल गोपाल से रूबरू हुआ। आप सबके सहज सरल मृदुल स्वभाव से हमे बड़ी आत्मशान्ति मिली। चबूतरे पर बैठकर लोक धर्म व स्वयोग पर चर्चा किया था। आप सबको वह तारीख याद होगी, वह तारीख थी 05.02.2011, जिसमें आप सब मानवधर्म प्रेमी सम्मिलित हुए थे।

1. श्री अशोक कुमार जी पिता-श्री सद्दी जी (लोली)
(मो.-9981520439, 9584543760)
2. श्री कोदूलाल जी पिता-श्री रामजियावन जी
3. श्री अशोक कुमार जी पिता-श्री रामकरण राम जी
(मो.-9993656125)
4. श्री प्रमोद कुमार पिता-श्री छोटेलाल जी (शिक्षक)
5. श्री अमृतलाल जी पिता-कैदीलाल जी
6. श्री राहुल जी पिता-छोटेलाल जी
7. श्री अशोक कुमार जी पिता-श्री बाबूलाल जी
8. श्री रमेश कुमार पिता-श्री बहोरीलाल जी (टेलेर)
9. श्री अनुजलाल पिता-श्री रामनारायण जी (शिक्षक)
10. श्री दयाराम जी पिता-श्री तिजोला जी
11. श्री लालजी राम पिता-श्री रामखेलावन जी।

मित्रमण्डल सिरगोवर्धन बी.एच.यू. (डाफी)बनारस उ.प्र.

विश्वशान्ति समन्वय रथ को लेकर आपके बीच आपके दरवाजे पर हम और हमारे मित्र परिव्राजक

आप सबसे मित्रता के वास्ते झोली फैलाया था, आप लोगों हमारे इस, मित्रमहोत्सव अभियान को हृदय से लगाकर हमें सान्त्वना दिया था कि हमसब मित्र-मित्र मिलकर एक-दूसरे के गले का हार बनेंगे। आशा है मोबा. नं. सबके अंकित हैं आप सब मित्र एक-दूसरे से मोबा. पर सम्पर्क करके मित्रमण्डल की संगोष्ठी अवश्य करेंगे और हमें पत्र द्वारा या मोबाइल द्वारा अवगत करायेंगे। जिससे एक नया वैज्ञानिकता के आधार पर समाज बढ़ चले। आप स्वयोग अवश्य करें। मार्गदर्शन में करूँगा स्वयोग के लिए प्रयास आप करें तब आपकी सारी मनोकामना पूरी होगी।

1. श्री भैयालाल यादव जी, मो.-9919888897
2. श्री दीपक सिंह ग्राम-सिरगोवर्धनपुर पो. डाफी वाराणसी, मो.-7084856000, 7379535431

3. श्री भरत प्रसाद जी (डाफी)
4. श्री मनोरंजन ओझा जी बधव श्री शम्भू नाथ पाण्डेय, मो.-9481060068
5. श्री सुरेश चन्द्र यादव, ग्राम/पो.-टिकरी, लंका वाराणसी, मो.-7526017358
6. श्री मंगल प्रसाद गंगोत्री प्रेस, गुरु रविदास जन्म स्थान वाराणसी, सिरगोवर्धनपुर, मो.-7052006541
7. श्री शुभम पाण्डेयजी, डाफी, मो.-7071793312
8. श्री हरिओम साहनी, ग्राम/पो.टीकर, थाना लंका वाराणसी, मो.-9598106710
9. श्री विजय कुमार मौर्या, ग्रा/पो.-शिवपुर, वाराणसी

**मित्रमण्डल ग्राम+पोस्ट-भूसाखाँड़, तह.-
चकिया, जिला-चन्दौली (म.प्र.)**

(1) श्री शंकर प्रसाद जी- मो. 9935978891

समस्या आपकी समाधान हमारे

आप सब इस मानव जीवन के दुःखों, आपत्तियों, विपत्तियों तथा अनेकानेक समस्याओं से जूझते हुए जीवन के दिन काट रहे होते हैं। इन तमाम दुःख दैन्य, आपत्ति-विपत्ति, भूत-प्रेत रोग शोक का कारण हमारा आत्मबल, मनोबल और शरीरबल के कमजोर होने के कारण होता है मनुष्य एक आध्यात्मिक प्राणी है। वह इन तमाम योनियों से क्रमशः विकास करते-करते अध्यात्म की ऊँची सीढ़ी पर पहुँचकर मानव जीवन धारण करता है।

इसलिए उसे अध्यात्मिकता में रुचि भी लगती है और अपने दुःख, रोग-शोक के उपचार में आध्यात्मिक विधान पर विश्वास भी करता है। क्योंकि आध्यात्मिक स्वभाव का विकास ही मानव जीवन है।

यदि आप वर्तमान के जीवन में समस्याओं से घिरे हैं जैसे-भूत-प्रेत, रोग, व्यापार, नौकरी, गरीबी, अदालत आदि से हमें अवगत करायें। आपकी दुःखभरी समस्याओं का हम यहाँ से यथा सम्भव उस एक सत्ता से पैगम्बरों की कारण सत्ता से निवेदन कर आपको समाधान देगे एवं उपचार करेंगे।

आपकी समस्या पत्र द्वारा या मोबाइल के नम्बर पर मैसेज के द्वारा भेजें। पत्र कभी किसी दिन भेज सकते हैं, किन्तु मोबाइल पर मैसेज केवल रविवार को शाम 8 बजे से 9 बजे के बीच ही भेजें। मोबाइल पर समस्या सम्बन्धी बातें न करें। समाधान की जानकारी पत्रिका के लेख में आपका नाम पता का हवाला देकर किया जायेगा।

पत्र व्यवहार का पता:-

रजदास जी

संयुक्त विश्व धर्म संघ ट्रस्ट ऋतम्भरा आश्रम कटरा

पो. रजनिया, तह.-सरई, जिला-सिंगरौली (म.प्र.)-486669

मैसेज के लिए

मोबाइल नं.-9755875934

(केवल रविवार रात्रि 8 बजे से 9 बजे के बीच)

अखण्ड रश्मियाँ

22

अप्रैल 2016

अपनों से एक अपील

हम सब सम्पादक मण्डल के सदस्य कई अन्य मिशनों से जुड़े हुए हैं। हम लोग अलग-अलग गुरुओं के अनुयायी हैं। हम सब अपने-अपने गुरुओं के बताये अनुसार ध्यान उपासना करते हैं। हम सब चिन्तनशील प्राणी हैं, अबुझमंत्र या चमत्कार-वमत्कार को हम लोग नमस्कार नहीं करते। सोच समझकर शोध के बाद ही किसी चीज को स्वीकार करते हैं। सच्चाई कहीं किसी की भी हो उसका सम्मान करते हैं।

हम सब कई मिशनों से जुड़े होने के नाते यह भी सुन रखा था और पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ा भी था कि इक्कीसवीं सदी का भारत विश्व के लिए कोई अनुपम उपहार देगा। इसके पीछे विश्व के भविष्यवक्ताओं, ज्योतिषियों, अतीन्द्रिय द्रष्टाओं, तत्वेत्ताओं और धर्मग्रन्थों का भी हवाला दे-देकर बताया जाता रहा। जिधर ही सुनते या पढ़ते उधर ही हम लोग लटक जाते। उसी मिशन व महाराज के अनुगामी बन जाते।

अन्ततोगत्वा हम लोगों ने देखा कि ये सब कल्कि भगवान के अवतार का दावा करते हैं। हम लोग भी उन्हीं पर भरोसा करते गये। किन्तु जब कल्कि पुराण पढ़ा तब हम लोगों के होश खड़े हो गये कि कल्कि का अवतार तो भारत में तीसरी सदी में बृहदरथ बौद्धी राजा के वध के साथ मिला, ब्राह्मणधर्म हिन्दूधर्म की पुनः स्थापना बौद्धों का कत्ले आम कर दिया गया। यह तो कल्कि पुराण बयान कर रहा है। तभी तो 1400 के लगभग महामण्डलेश्वरों ने कल्कि होने का दावा तो किये पर प्रमाणित एक भी नहीं हो पाये।

उन्हें यह नहीं पता कि भारत विश्व को जो

अनुपम उपहार देगा वह कल्कि नहीं, नवी अवतारी नहीं वह कोई और तरह का होगा, जिसमें अमुक-अमुक लक्षण होंगे।

इन सब बातों को लेकर हम सबों ने एक सामान्य आदमी जो निरा देहाती थे, उनके बारे में जानने के लिए उनके भीतर प्रवेश लिया। प्रवेश के दौरान, स्वाध्याय के दौरान कुछ उनके बताये अनुसार जाँच-परख किया तो देखा कि यह देहाती आदमी वही किये जा रहा है जो वास्तव में विश्व के लिए आवश्यक है, पर इसका मौन स्वभाव निष्काम कर्मभाव, उदासीन आचरण के कारण इन्हें समझने में दिक्कत आती रही।

किन्तु उन अतीत की भविष्यवाणियों को जब हम लोगों ने ताल-मेल बैठाना शुरू किया तो अधिकतम इनसे मेल खाती है—आप व हमारे बातों पर विश्वास नहीं शोध करें जब आपको यकीन हो जाय तब हमारे साथ दो कदम प्रवेश कर जाँच पड़ताल करके स्वीकार करें या जो आपकी इच्छा हो वह करें। आइये कुछ भविष्यवाणियों के बारे में देखते हैं—

(1)

मैंने सुना है यहाँ कई तरह के अग्नियास्त्र, वरुणास्त्र और अनेक गगनगामी विमानों के भी अनुसंधान हो चुके हैं। आगे भी यह देश इस तरह की उन्नति करेगा और उस दौड़ में दुनिया के तमाम देशों को पछाड़ देगा। पर मूलतः इसकी ख्याति और विश्व प्रतिष्ठा का आधार यहाँ का धर्म और दर्शन होगा। विश्वधर्म के रूप में भारतीय धर्म और संस्कृति को ही स्थान मिलेगा।

—श्री क्लार्क (भविष्यवक्ता)

तलाश:-

हम लोगों ने जब इन पर तलाश जारी किया, शोध किया, इनके कुछ साहित्यों का अध्ययन किया तब पाया कि-भारतीय धर्म और भारतीय संस्कृति को इन्होंने पैकिंग बदलकर किस तरह से विश्वधर्म बना दिया है कि दातों तले उँगली दबाना पड़ता है। वैदिक पूर्व व्यवस्था को लेकर अभेद व्यवस्था देकर, एक इंसान और एक ईश्वर को लेकर ऐसा सूत्र व सिद्धान्त दे दिये हैं कि जिसमें सर्वधर्म स्वीकृति, सर्वधर्म समाहार, सर्वधर्म सहिष्णुता, सर्वधर्म मैत्रीयता, सर्वधर्म समादार, सर्वधर्म समभाव और सर्वधर्म समन्वय का पवित्र सागर भरा है। विश्वधर्म पर आधारित, पैगाम, पागलपोथी, वसुधैव कुटुम्बकम्, मूलपथ, विश्वदर्शन जैसे ग्रन्थ लिखे गये हैं।

(2)

संसार के किसी सर्वाधिक प्राचीन पर्वत जो वर्षभर बर्फ से ढका रहता है (सम्भवतः हिमालय) उससे संबंधित देश इतना शक्तिशाली हो सकता है कि रूस, अमेरिका, फ्रान्स और जर्मनी मिलाकर उसका सामना करने में सामर्थ्य न हों। इस किसी भूभाग से एक रहस्यमय व्यक्ति का अभ्युदय होगा जो आज तक के इतिहास में सबसे अधिक समर्थ व्यक्ति सिद्ध होगा। उसके बनाये विधान संसार में लागू होंगे और सन् 2025 तक वह सारी पृथ्वी को एक संघीय राज्य में बदल देगा।

- श्री जूलबर्न

तलाश:-

उनसे जब कुछ जानकारी चाही जाती है तब वे यही कहते हैं कि मैं मौन अपना काम कर रहा हूँ। जो दुनिया के वास्ते ही है जब दुनिया को जरूरत पड़ेगी तो ले जायेगी। अधिक हमें न कुछ कहना है और न ही करना है।

जब हम लोगों ने उनका लिखा ग्रन्थ

“वसुधैव कुटुम्बकम्” पढ़ा तब उन्होंने इतना बताया कि यह ग्रन्थ संयुक्त रूप से हिमालय में ही बैठकर सृजा गया है। इससे हिमालय और पुस्तक दोनों का प्रमाण मिल जाता है। तीसरी बात स्वर्ण मुद्रा की तो ये बात उनके जीवन से मेल नहीं खाती। चौथी बात ऐसा विधान देगा जिससे सारा विश्व एक संघीय राज्य में बदल जायेगा। इसका प्रमाण वसुधैव कुटुम्बकम् ग्रन्थ में विश्व शासन संविधान लिखा है, जिसमें विश्व न्यायालय, विश्व चुनाव आयोग, विश्वमुद्रानीति, विश्व की राजधानी, विश्व सुरक्षा नीति, विश्व नागरिकता आदि का उल्लेख है। विश्वधर्म आचार संहिता और विश्वशासन संविधान दोनों इस ग्रन्थ में वर्णित हैं।

विश्वराष्ट्रगान इसी ग्रन्थ में वर्णित है जो पूरे विश्व को एक मर्यादा में बाँध देता है। हिमालय से जुड़ा देश हिन्दुस्तान भी और इनका जन्मभूमि भी प्रमाणित होता है।

(3)

उस महा पुरुष के मस्तिष्क में दोनों भौहों के बीच अंग्रेजी के “V” के आकार का चन्द्रमा होगा। गले में दो रेखाएँ युक्त अर्धचन्द्र का चिन्ह होगा। वह विशुद्ध भारतीय वेशभूषा में होगा। उसके शरीर में दैवीय निशानियाँ होगी, 24 वर्ष की आयु में योग में प्रवेश करेगा, 24 अक्षर के मंत्र का जाप करेगा। - प्रो. कीरो

तलाश:-

तलाश के दौरान हमसब नहीं कोई भी उनके मस्तिष्क पर “त” के आकार का चन्द्रमा देख सकता है अभी तो जिन्दा है। आज की फैशन की दुनिया में भी वे धोती कुर्ता ही उनका परिधान है। 24 अक्षर गायत्री मंत्र का आज भी वे जाप करते हैं, 24 वर्ष की उमर में हिमालय में तप हेतु चले गये थे। दैवी निशानियाँ जो लोग जानते हो आकर देख सकते हैं। क्रमश.....